

॥ रघुवीर गद्यं ॥

जयत्याश्रित संत्रास ध्वान्त विध्वंसनोदयः ।  
प्रभावान् सीतया देव्या परम-व्योम भास्करः ॥

जय जय महावीर !  
महाधीर धौरेय !  
देवासुर समर समय समुदित निखिल निर्जर निर्धारित  
निरवधिकमाहात्म्य !  
दशवदन दमित दैवत परिषदभ्यर्थित दाशरथि-भाव !  
रणाध्वर धुर्य भव्य दिव्यास्त्र वृन्द वन्दित !  
प्रणत जन विमत विमथन दुर्ललितदोर्ललित !  
तनुतर विशिख विताडन विघटित विशरारु शरारु  
ताटका ताटकेय !  
जड-किरण शकल-धरजटिल नट पति-मकुट नटन-पटु  
विबुध-सरिद्-अति-बहुल मधु-गलन ललित-पद  
नलिन-रज-उप-मृदित निज-वृजिन जहदुपल-तनु-रुचिर  
परम-मुनि वर-युवति नुत !  
कुशिक-सुतकथित विदित नव विविध कथ !  
मैथिल नगर सुलोचना लोचन चकोर चन्द्र !  
खण्ड-परशु कोदण्ड प्रकाण्ड खण्डन शौण्ड भुज-दण्ड !  
चण्ड-कर किरण-मण्डल बोधित पुण्डरीक वन रुचि लुण्टाक लोचन !  
मोचित जनक हृदय शङ्कातङ्क !  
परिहृत निखिल नरपति वरण जनक-दुहित कुच-तट विहरण  
समुचित करतल !  
शतकोटि शतगुण कठिन परशु धर मुनिवर कर धृत  
दुरवनम-तम-निज धनुराकर्षण प्रकाशित पारमेष्ठ्य !  
ऋतु-हर शिखरि कन्तुक विहृतिमुख जगदरुन्तुद  
जितहरिदन्त-दन्तुरोदन्त दश-वदन दमन कुशल दश-शत-भुज  
नृपति-कुल-रुधिरझर भरित पृथुतर तटाक तर्पित  
पितृक भृगु-पति सुगति-विहृति कर नत परुडिषु परिघ !  
अनृत भय मुषित हृदय पितृ वचन पालन प्रतिज्ञावज्ञात  
यौवराज्य !

निषाद राज सौहृद सूचित सौशील्य सागर !  
 भरद्वाज शासनपरिगृहीत विचित्र चित्रकूट गिरि कटक  
 तट रम्यावसथ !  
 अनन्य शासनीय !  
 प्रणत भरत मकुटतट सुघटित पादुकाग्याभिषेक निर्वर्तित  
 सर्वलोक योगक्षेम !  
 पिशित रुचि विहित दुरित वल-मथन तनय बलिभुगनु-गति सरभसशयन तृण  
 शकल परिपतन भय चरित सकल सुरमुनि-वर-बहुमत महास्त्र सामर्थ्य !  
 दूहिण हर वल-मथन दुरालक्ष्य शर लक्ष्य !  
 दण्डका तपोवन जङ्गम पारिजात !  
 विराध हरिण शार्दूल !  
 विलुलित बहुफल मख कलम रजनि-चर मृग मृगयानम्भ  
 संभृतचीरभृदनुरोध !  
 त्रिशिरः शिरस्त्रितय तिमिर निरास वासर-कर !  
 दूषण जलनिधि शोशाण तोषित ऋषि-गण घोषित विजय घोषण !  
 खरतर खर तरु खण्डन चण्ड पवन !  
 द्विसप्त रक्षः-सहस्र नल-वन विलोलन महा-कलभ !  
 असहाय शूर !  
 अनपाय साहस !  
 महित महा-मृथ दर्शन मुदित मैथिली दृढ-तर परिरम्भण  
 विभवविरोपित विकट वीरव्रण !  
 मारीच माया मृग चर्म परिकर्मित निर्भर दर्भास्तरण !  
 विक्रम यशो लाभ विक्रीत जीवित गृध्र-राजदेह दिधक्षा  
 लक्षित-भक्त-जन दाक्षिण्य !  
 कल्पित विबुध-भाव कबन्धाभिनन्दित !  
 अवन्ध्य महिम मुनिजन भजन मुषित हृदय कलुष शबरी  
 मोक्षसाक्षिभूत !  
 प्रभञ्जन-तनय भावुक भाषित रञ्जित हृदय !  
 तरणि-सुत शरणागतिपरतन्त्रीकृत स्वातन्त्र्य !  
 दृढ घटित कैलास कोटि विकट दुन्दुभि कङ्काल कूट दूर विक्षेप  
 दक्ष-दक्षिणेतर पादाङ्गुष्ठ दर चलन विश्वस्त सुहृदाशय !  
 अतिपृथुल बहु विटपि गिरि धरणि विवर युगपदुदय विवृत चित्रपुङ्ग वैचित्र्य !  
 विपुल भुज शैल मूल निबिड निपीडित रावण रणरणक जनक चतुरुदधि  
 विहरण चतुर कपि-कुल पति हृदय विशाल शिलातल-दारण दारुण शिलीमुख !  
 अपार पारावार परिखा परिवृत परपुर परिसृत दव दहन  
 जवन-पवन-भव कपिवर परिष्वङ्ग भावित सर्वस्व दान !

अहित सहोदर रक्षः परिग्रह विसंवादिविविध सचिव विप्रलम्भ समय  
 संरम्भ समुज्जृम्भित सर्वेश्वर भाव !  
 सकृत्प्रपन्न जन संरक्षण दीक्षित !  
 वीर !  
 सत्यव्रत !  
 प्रतिशयन भूमिका भूषित पयोधि पुलिन !  
 प्रलय शिखि परुष विशिख शिखा शोषिताकूपार वारि पूर !  
 प्रबल रिपु कलह कुतुक चटुल कपि-कुल कर-तलतुलित हृत गिरिनिकर साधित  
 सेतु-पथ सीमा सीमन्तित समुद्र !  
 द्रुत गति तरु मृग वरूथिनी निरुद्ध लङ्कावरोध वेपथु लास्य लीलोपदेश  
 देशिक धनुर्ज्याघोष !  
 गगन-चर कनक-गिरि गरिम-धर निगम-मय निज-गरुड गरुदनिल लव गलित  
 विष-वदन शर कदन !  
 अकृत चर वनचर रण करण वैलक्ष्य कूणिताक्ष बहुविध रक्षो  
 बलाध्यक्ष वक्षः कवाट पाटन पटिम साटोप कोपावलेप !  
 कटुरटद् अटनि टङ्कृति चटुल कठोर कार्मुक !  
 विशङ्कट विशिख विताडन विघटित मकुट विह्वल विश्रवस्तनयविश्रम  
 समय विश्राणन विख्यात विक्रम !  
 कुम्भकर्ण कुल गिरि विदलन दम्भोलि भूत निःशङ्क कङ्कपत्र !  
 अभिचरण हुतवह परिचरण विघटन सरभस परिपतद् अपरिमितकपिबल  
 जलधिलहरि कलकल-रव कुपित मघव-जिदभिहनन-कृदनुज साक्षिक  
 राक्षस द्वन्द्व-युद्ध !  
 अप्रतिद्वन्द्व पौरुष !  
 त्र यम्बक समधिक घोरास्त्राडम्बर !  
 सारथि हृत रथ सत्रप शात्रव सत्यापित प्रताप !  
 शितशरकृतलवनदशमुख मुख दशक निपतन पुनरुदय दरगलित जनित  
 दर तरल हरि-हय नयन नलिन-वन रुचि-खचित निपतित सुर-तरु कुसुम वितति  
 सुरभित रथ पथ !  
 अखिल जगदधिक भुज बल वर बल दश-लपन लपन दशक लवन-जनित कदन  
 परवश रजनि-चर युवति विलपन वचन समविषय निगम शिखर निकर  
 मुखर मुख मुनि-वर परिपणित!  
 अभिगत शतमख हुतवह पितृपति निर्ऋति वरुण पवन धनदगिरिशप्रमुख  
 सुरपति नुति मुदित !  
 अमित मति विधि विदित कथित निज विभव जलधि पृषत लव !  
 विगत भय विबुध विबोधित वीर शयन शायित वानर पृतनौघ !  
 स्व समय विघटित सुघटित सहृदय सहधर्मचारिणीक !

विभीषण वशंवदी-कृत लङ्केश्वर्य !  
 निष्पन्न कृत्य !  
 ख पुष्पित रिपु पक्ष !  
 पुष्पक रभस गति गोष्पदी-कृत गगनार्णव !  
 प्रतिज्ञार्णव तरण कृत क्षण भरत मनोरथ संहित सिंहासनाधिरूढ !  
 स्वामिन् !  
 राघव सिंह !  
 हाटक गिरि कटक लडह पाद पीठ निकट तट परिलुठित निखिलनृपति किरीट  
 कोटि विविध मणि गण किरण निकर नीराजितचरण राजीव !  
 दिव्य भौमायोध्याधिदैवत !  
 पितृ वध कुपित परशु-धर मुनि विहित नृप हनन कदन पूर्वकालप्रभव  
 शत गुण प्रतिष्ठापित धार्मिक राज वंश !  
 शुच चरित रत भरत खर्वित गर्व गन्धर्व यूथ गीत विजय गाथाशत !  
 शासित मधु-सुत शत्रुघ्न सेवित !  
 कुश लव परिगृहीत कुल गाथा विशेष !  
 विधि वश परिणमदमर भणिति कविवर रचित निज चरितनिबन्धन निशमन  
 निर्वृत !  
 सर्व जन सम्मानित !  
 पुनरुपस्थापित विमान वर विश्राणन प्रीणित वैश्रवण विश्रावित यशः  
 प्रपञ्च !  
 पञ्चतापन्न मुनिकुमार सञ्जीवनामृत !  
 त्रेतायुग प्रवर्तित कार्तियुग वृत्तान्त !  
 अविकल बहुसुवर्ण हय-मख सहस्र निर्वहण निर्वर्तित  
 निजवर्णाश्रम धर्म !  
 सर्व कर्म समाराध्य !  
 सनातन धर्म !  
 साकेत जनपद जनि धनिक जङ्गम तदितर जन्तु जात दिव्य गति दान दर्शित नित्य  
 निस्सीम वैभव !  
 भव तपन तापित भक्तजन भद्राराम !  
 श्री रामभद्र !  
 नमस्ते पुनस्ते नमः ॥

चतुर्मुखेश्वरमुखैः पुत्र पौत्रादि शालिने ।  
 नमः सीता समेताय रामाय गृहमेधिने ॥

कविकथक सिंहकथितं

कठोत सुकुमार गुम्भ गम्भीरम् ।  
भव भय भेषजमेतत्  
पठत महावीर वैभवं सुधियः ॥

सर्वं श्री कृष्णार्पणमस्तु

---

The text is authored by Shri vedAnta deshika a great Vaishnava scholar, also known as Shri nigamaanta mahaa deshikan, also possessing the title kavithaarkika simham.  
In his works, the indication or mudhra is "venkatesa" or venkata kavi .

Encoded by T. R. Chari trchari@hotmail.com  
<http://trchari.tripod.com/script.html>

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)  
Last updated August 25, 2002